REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 12 | ISSUE - 4 | JANUARY - 2023

लिंगगत भिन्नता के सन्दर्भ में विद्यालयीन अध्यापकों की कार्यशैली वरीयताओं का अध्ययन

डॉ. मनोज कुमार शर्मा
प्राचार्य, महात्मा गाँधी टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज, महवा, दौसा (राज.)

सारांश

राजस्थान प्रान्त के जयपुर जिले में विद्यमान विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की नौ द्वि-ध्रुवीय कार्य-शैलियों की यथा-स्थैतिक आधार पर व्याख्या लिंगगत भिन्नता के सन्दर्भ में करने के लिए 'वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि' का प्रयोग किया गया। काई वर्ग परीक्षण से निष्कर्ष रूप में यह पाया गया है कि विद्यालयों में कार्यरत पुरुष तथा महिला अध्यापकों द्वारा उत्तरदायित्व पूर्ण बनाम उत्तरदायित्व मुक्त कार्यशैली के प्रति प्रदत्त वरीयताएँ उनकी लिंगगत भिन्नता से स्वतंत्र हैं। शेष सभी कार्य शैलियों (विश्लेषणात्मक बनाम पूर्णात्मक, क्षेत्र स्वतन्त्र बनाम क्षेत्र आधारित, लघु सातत्य प्रधान बनाम दीर्घ सातत्य प्रधान, अभिप्रेरणा केन्द्रित बनाम अभिप्रेरणा गैर केन्द्रित, वातावरण सापेक्ष बनाम वातावरण निरपेक्ष तथा वैयक्तिक बनाम गैर वैयक्तिक, दृश्य उन्मुख बनाम श्रव्य उन्मुख) के प्रति विद्यालयीन पुरुष तथा महिला अध्यापकों द्वारा प्रदत्त वरीयताएँ लिंगगत भिन्नता से स्वतंत्र नहीं हैं।

प्रयुक्त शब्दावली: विद्यालयीन अध्यापक, लिंगगत भिन्नता, वर्णनात्मक सर्वेक्षण, काई वर्ग परीक्षण, अध्यापक कार्यशैली.

अध्यापक औपचारिक शिक्षा व्यवस्था की धूरी है। अध्यापकों की विशिष्टताओं एवं विविधताओं की पहचान पर इसकी सफलता निर्भर करती है। सभी अध्यापकों एवं कार्य क्षेत्र में उपस्थित मानवीय तत्वों में व्यापक विशिष्टताएँ होने के कारण समस्याएँ और जटिलताएँ शामिल हो जाती हैं। ऐसी स्थिति में कार्य क्षेत्र की आवश्यकतानुरूप व्यावहारिक शैक्षिक कार्यक्रम का निरूपण करना अनिवार्य हो जाता है। जब तक अध्यापक खुद यह तय नहीं कर लेता है कि वास्तव में उसे क्या करने की जरुरत है और वह नियत कार्य को कैसे अधिक सुगमता से कार्य कर सकता है, तब तक उसके कार्य व्यवहार में सुधार का प्रयास निरर्थक हो सकते हैं।

डन एवं प्रेशनिग (1993-94) और फिर प्रेशनिग (2004) ने व्यक्ति की कार्य शैली के विश्लेषण में जैव-शारीरिक निर्मिति एवं मस्तिष्क प्रसंस्करण, संवेदी रूपात्मकताओं, शारीरिक आवश्यकताओं, वातावरणीय वरीयताओं, सामाजिक पक्षों, तथा

वृत्तिक अभिवृत्तियों के अनुबन्धित शैली तत्वों को सम्मिलित किया। यह शैलीगत दृष्टिकोण अध्यापक को एक 'विशिष्ट व्यक्ति' के रूप में तो प्रस्तुत करता है लेकिन अभी तक पर्याप्त प्रमाण उपलब्ध नहीं कर पाया है जो कार्यरत अध्यापक की समझ बेहतर बनाने की दृष्टि से उसकी व्यक्तिगत 'विशिष्टता' और कार्य गतिविधियों में समुदाय के सदस्य के रूप में 'अध्यापक की विशिष्टता' की अवधारणा को स्पष्ट कर दे। इस तरह क्षेत्र में और अधिक स्पष्ट सम्प्रत्ययात्मक समझ विकसित करने की आवश्यकता और अनेक विसंगितियों को महसूस करते हुए अध्येता अध्यापक की वैयक्तिक विभिन्नता के विभिन्न आयामों पर अनुसंधान करने में रूचि ले रहे हैं।

इस क्रम में शम्सुद्दीन (1996) ने अध्यापकों की जीवनवृत्ति पर सामाजिक-आर्थिक कारकों के प्रभाव का अध्ययन में पाया कि ज्यादातर पुरूष अध्यापक निम्न और मध्यम वर्ग से और अधिकतर महिला अध्यापक उच्च मध्यम वर्ग व उच्च वर्ग से थी तथा आर्थिक कारक पुरूष तथा महिला अध्यापकों के प्रदर्शन पर प्रभाव डालते हैं। सुबुद्धि (1997) ने माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों में कार्य सम्बन्धी तनाव और बर्न आउट का अध्ययन में पाया कि पुरूष अध्यापकों में महिला अध्यापकों की तुलना में बर्नआउट सार्थक रूप से उच्च रहता है। सेलेप (2000) ने सेवापूर्व अध्यापकों की स्व-क्षमता, साथियों व विद्यार्थियों एवं प्रशासन के प्रति धारणा तथा विद्यार्थी नियन्त्रण के मध्य सम्बन्ध जानने के लिए किये गए अपने अध्ययन में यह पाया कि अध्यापकों के लिंगगत के संन्दर्भ में विद्यार्थियों के प्रति दृष्टिकोण, प्रशासन की स्वीकारोक्ति जैसे कारकों में सार्थक भिन्नता थी। महिला अध्यापक कक्षा प्रबन्धन में अनुशासन सम्बन्धी नियमों को प्राथमिकता देने के साथ ही विद्यार्थियों को नियन्त्रित करने में पुरूष अध्यापकों की तुलना में ज्यादा अधिकारिक पाए गए। संथाना एवं अन्य (1995) ने अध्यापक प्रभावशीलता पर लिंगगत प्रभाव के अध्ययन में पाया कि लिंगगत भिन्नता का अध्यापन प्रभावशीलता पर सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

शर्मा (2018) ने शैक्षिक योग्यता के सन्दर्भ में राजस्थान राज्य के जयपुर जिले में स्थित प्राथमिक, उच्च प्राथमिक, माध्यमिक तथा उच्च माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की कार्यशैली वरीयताओं को समझने के लिए किये गए वर्णनात्मक सर्वेक्षण में यह पाया कि विद्यालयीन अध्यापकों की उत्तरदायित्व पूर्ण बनाम उत्तरदायित्व मुक्त कार्यशैली के प्रति वरीयताएँ उनकी शैक्षिक योग्यता से स्वतंत्र होती हैं जबकि शेष सभी कार्यशैलियों पर विद्यालयीन अध्यापकों द्वारा प्रदत्त वरीयताएँ उनकी शैक्षिक योग्यता से स्वतंत्र नहीं होती हैं। शर्मा (2018अ) ने पद स्थिति के सन्दर्भ में अध्यापकों की कार्य-शैली वरीयताओं से सम्बंधित अपने अध्ययन में यह पाया कि प्रथम, द्वितीय व तृतीय श्रेणी अध्यापकों की नमनीय बनाम अनमनीय तथा अभिप्रेरणा केन्द्रित बनाम अभिप्रेरणा गैर केन्द्रित कार्य-शैली के प्रति वरीयताओं को छोड़कर शेष सभी कार्यशैलियों पर सार्थक रूप से भिन्न वरीयताएँ देते हैं।

उपर्युक्त अध्ययन प्रमाणों से यह पता चलता है कि लिंगगत भिन्नता के साथ अध्यापकों से सम्बन्धित विभिन्न आश्रित चरों के बीच संबंधों के अध्ययन में शम्सुद्दीन (1996), सुबुद्धि (1997) और सेलेप (2000) ने लिंगगत भिन्नता को एक प्रभावी कारक पाया जबकि संथाना व अन्य (1995) के अनुसार अध्यापक प्रभावशीलता पर लिंगगत प्रभाव नहीं पड़ता है। कार्यशैली से सम्बंधित अध्ययनों में शर्मा (2008) ने कतिपय वैयक्तिक कारकों, शर्मा (2018) ने शैक्षिक योग्यता के सन्दर्भ में उत्तरदायित्व पूर्ण बनाम उत्तरदायित्व मुक्त कार्यशैली के अतिरिक्त सभी तथा शर्मा (2018अ) ने विद्यालयीन पद स्थिति के सन्दर्भ में नमनीय बनाम अनमनीय एवं अभिप्रेरणा केन्द्रित बनाम अभिप्रेरणा गैर केन्द्रित कार्य-शैली के प्रति वरीयताओं के अतिरिक्त सभी कार्यशैलियों पर अध्यापकों की वरीयताओं में साहचर्य पाया। ऐसे में क्या विद्यालयों में कार्यरत पुरुष तथा महिला अध्यापकों

द्वारा प्रदत्त वरीयताएँ उनकी लिंगगत भिन्नता से स्वतंत्र होती हैं? इस प्रश्न पर अवधारणात्मक स्पष्टता के लिए शोधकर्ता ने लिंगगत भिन्नता के सन्दर्भ में विद्यालयीन अध्यापकों की कार्यशैली वरीयताओं का अध्ययन किया।

शोध उद्देश्य और परिकल्पना

मिश्रा (2003) के द्वारा वर्गीकृत सभी नौ द्वि-ध्रुवीय कार्य-शैलियों पर लिंगगत भिन्नता के सन्दर्भ में अध्यापकों की वरीयताओं के अध्ययन करने के लिए प्रत्येक कार्य शैली पर अध्यापकों द्वारा प्रदत्त वरीयताओं के लिंगगत भिन्नता से स्वतंत्र होने की कुल नौ परिकल्पनाएँ निर्मित की गयी।

शोध अध्ययन विधि

लिंगगत भिन्नता के सन्दर्भ में अध्यापकों की नौ द्वि-ध्रुवीय कार्य-शैलियों की व्याख्या यथा-स्थैतिक आधार पर करने के लिए 'वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि' का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्शन प्रक्रिया एवं न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन में राजस्थान राज्य के जयपुर जिले में स्थित प्राथमिक, उच्च प्राथमिक, माध्यमिक तथा उच्च माध्यमिक विद्यालयों में से यादृच्छिक चयन प्रारूप के अन्तर्गत न्यादर्श का चयन बहुस्तरीय न्यादर्श चयन विधि से किया गया। अध्ययन के अन्तिम न्यादर्श में कुल 795 अध्यापक (494 पुरूष तथा 291 महिला) चयनित हुए।

शोध उपकरण तथा प्रदत्तों की प्रकृति

शोधकर्ता द्वारा निर्मित एवं मानकीकृत अध्यापक कार्यशैली सूची का प्रशासन करते हुए अध्यापकों की कार्यशैलियों पर वरीयताओं का मापन किया गया। प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रदत्तों की प्रकृति मात्रात्मक रही।

सांख्यिकीय प्रविधियाँ

न्यादर्श को लिंगगत भिन्नता के सन्दर्भ में पुरूष तथा महिला अध्यापकों की कार्यशैलियों के अध्ययन हेतु 2×2 की आसंग तालिकाएँ निर्मित करते हुए प्रत्येक कार्यशैली के प्रति पुरूष तथा महिला अध्यापकों द्वारा प्रदर्शित वरीयताओं के काई वर्ग के मानों का परिकलन कर परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया।

शोध निष्कर्ष

विद्यालयीन पुरुष तथा महिला अध्यापकों द्वारा उत्तरदायित्व पूर्ण बनाम उत्तरदायित्व मुक्त कार्यशैली के प्रति प्रदत्त वरीयताएँ उनकी लिंगगत भिन्नता से स्वतंत्र हैं। शेष सभी कार्य शैलियों (विश्लेषणात्मक बनाम पूर्णात्मक, क्षेत्र स्वतन्त्र बनाम क्षेत्र आधारित, लघु सातत्य प्रधान बनाम दीर्घ सातत्य प्रधान, अभिप्रेरणा केन्द्रित बनाम अभिप्रेरणा गैर केन्द्रित, वातावरण सापेक्ष बनाम वातावरण निरपेक्ष तथा वैयक्तिक बनाम गैर वैयक्तिक, दृश्य उन्मुख बनाम श्रव्य उन्मुख) के प्रति विद्यालयीन पुरुष तथा महिला अध्यापकों द्वारा प्रदत्त वरीयताएँ लिंगगत भिन्नता से स्वतंत्र नहीं हैं।

निष्कर्ष परिचर्चा तथा शैक्षिक निहितार्थ

प्रस्तुत अध्ययन में अध्यापकों की कार्यशैलियों का लिंगगत भिन्नता के सन्दर्भ में अध्ययन किया गया है। इससे प्राप्त निष्कर्षों के शैक्षिक नियोजकों, संस्था प्रधानों के साथ ही स्वयं शिक्षकों के लिए अग्रलिखित निहितार्थ हो सकते हैं-

- लिंगगत भिन्नता के सन्दर्भ में अधिकाँश अध्यापकों ने उत्तरदायित्व मुक्त कार्यशैली की तुलना में उत्तरदायित्व पूर्ण कार्यशैली को अधिक वरीयता दी है। यह निष्कर्ष सुझाता है कि अध्यापकों की इस कार्यशैली विशिष्टताओं को ध्यान में रखते हुए इन्हें स्वतंत्र रूप से कार्यभार देते हुए विद्यालय परिवेश को उत्पादक बना सकते हैं। विश्लेषणात्मक बनाम पूर्णात्मक, क्षेत्र स्वतन्त्र बनाम क्षेत्र आधारित, लघु सातत्य प्रधान बनाम दीर्घ सातत्य प्रधान, अभिप्रेरणा केन्द्रित बनाम अभिप्रेरणा गैर केन्द्रित, वातावरण सापेक्ष बनाम वातावरण निरपेक्ष तथा वैयक्तिक बनाम गैर वैयक्तिक, दृश्य उन्मुख बनाम श्रव्य उन्मुख कार्य शैलियों के प्रति अध्यापकों द्वारा प्रदत्त वरीयताएँ उनकी लिंगगत भिन्नता से स्वतंत्र नहीं पायी हैं। अर्थात् लिंगगत भिन्नता के सन्दर्भ में पुरुष तथा महिला अध्यापकों की कार्यशैलियाँ एक जैसी नहीं पायी गयी हैं तथा इन अध्यापकों ने विशिष्ट कार्यशैलियों पर अधिक वरीयताएँ प्रदर्शित की हैं। पुरुष तथा महिला अध्यापकों को उनकी कार्यशैली विशिष्टतों का ध्यान रखते हुए कार्य लक्ष्य प्राप्ति, जटिल कार्य समस्याओं के समाधान, अनुकूल वातावरण सृजन, कार्य क्षेत्र में उत्पादकता संवर्धन, उपयुक्त दक्षता विकास में सहायता दी जा सकती है। स्वयं अध्यापक भी कार्य-व्यवहार में उपयुक्त शैली का उपयोग करने के लिए संवेदनशीलता विकसित कर सकते हैं। सातत्य का विकास एक जटिल कार्य है तथापि निरन्तर धैर्य रखते हुए उच्च संज्ञानात्मक प्रक्रिया, तार्किकता, अमूर्त चिन्तन एवं सृजनात्मक समस्या समाधान जैसी गतिविधियों सहित अनेक रूचिशील एवं सक्रियता प्रधान उपयुक्त अभ्यासों से सातत्य को बढ़ाया जा सकता है।
- स्वेच्छा से कार्य को शुरू करने, चुनौतीपूर्ण समस्याओं का सामना करने एवं समस्या समाधान खोजने जैसी गतिविधियों की आवृत्ति बढ़ाते हुए पुरुष तथा महिला अध्यापकों की स्व प्रेरणा का उच्चतम उपयोग लिया जा सकता है। अध्यापकों को यथा संभव सार्वजनिक रूप से प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। कार्य के प्रति रूचि जागृत करने हुए वातावरण के प्रति संवेदनशीलता विकसित करने की चेष्टा भी की जानी चाहिए।

  लिंगगत भिन्नता के कारण शैक्षिक क्षेत्र में आने वाली समस्याओं के निराकरण की दिशा में प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्ष महत्त्वपूर्ण निहितार्थ रख सकते हैं, फिर भी और अधिक बड़े न्यादर्श और या 'वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि' से अलग अध्ययन विधि का प्रयोग करते हुए इस अध्ययन के निष्कर्ष की पुष्टि सैद्धांतिक रूप से महत्वपूर्ण हो सकती है।

सन्दर्भ सूची

- डन, रीटा एण्ड प्रेशनिग, बारबरा (1993-94). वर्किंग स्टाइल्स एनालसिस, कार्पोरेट वर्जन, एट, www. Creativelearningcentre.com
- प्रेशनिग, बारबरा (2004). दा पावर ऑफ डाइवर्जिटी, न्यू वेज ऑफ लर्निंग एण्ड टीचिंग, स्टेनफोर्ड, कण्टीनुम इन्टरनेशनल पब्लिशिंग ग्रुप.
- मिश्रा, मुरलीधर (2003). अध्यापकों की कार्यशैलियों का अध्ययन, स्वतन्त्र अध्ययन, वनस्थली विद्यापीठ.
- वियरस्मा, विलियम (1986). रिसर्च मैथड्स इन एज्यूकेशन: एन इन्ट्रोडक्शन, बोस्टन, सी ए: एलन एण्ड बैकन.

- शम्सुद्दीन, हाजी (1996), द इन्फ्लुएन्स ऑफ सॉशियो-इकॉनामिक फेक्टर्स आन टीचर्स कॅरिअर, द प्राइमरी टीचर 21 (1), 6-11.
- शर्मा, मनोज कुमार (2008). विभिन्न वैयक्तिक कारकों के सन्दर्भ में अध्यापकों की कार्य शैली का अध्ययन, अप्रकाशित शोध प्रबन्ध, शिक्षाशास्त्र, जयपुर: राजस्थान विश्वविद्यालय.
- शर्मा, मनोज कुमार (2018). शैक्षिक योग्यता के सन्दर्भ में विद्यालयीन अध्यापकों की कार्यशैली का अध्ययन, चेतना: इंटरनेशनल एजुकेशनल जर्नल, 3 (1), अप्रैल, 251-254.
- शर्मा, मनोज कुमार (2018अ). अध्यापकों की कार्य-शैलियों का पद स्थिति के सन्दर्भ में अध्ययन, चेतना: इंटरनेशनल एजुकेशनल जर्नल, 3 (स्पे-2), अप्रैल 2018, 96-99.
- संथाना व अन्य (1995), इम्पेक्ट ऑफ टीचर्स सेक्स, सोशियो-इकोनॉमिक स्टेट्स एण्ड लोकेल ऑन टीचर इफेक्टिवनेस, दा प्रोग्रेस ऑफ एजुकेशन, 69 (8), 146-147.
- सुबुद्धि भगवान (1997), जाब स्ट्रेस एण्ड बर्न आउट इन टीचर्स ऑफ सैकण्डरी स्कूल्स इन उड़ीसा, जनरल ऑफ एजुकेशन रिसर्च एण्ड एक्सटेंशन, 33 (4).
- सेलेप (2000) केवेट सेलेप (2000), दा कोरिलेशन ऑफ दा फेक्टर्स : दा प्रोस्पेक्टिव टीचर्स सेन्स ऑफ एफ्फिकेसी एण्ड बिलिफ्स, एण्ड एटीटयूड अकाउंट स्टुडेण्ट कन्ट्रोल 21; इनः नेशनल फोरम ऑफ टीचर एजुकेशनल एडमिनिस्ट्रेशन एण्ड सुपर विजन जर्नल आईसी वी 17 (4).